

शान्तिनाथ भगवान चालीसा

शान्तिनाथ भगवान का, चालीसा सुखकार ॥
मोक्ष प्राप्ति के लिय, कहूँ सुनो चितधार ॥

चालीसा चालीस दिन तक, कह चालीस बार ॥
बढ़े जगत सम्पन, सुमत अनुपम शुद्ध विचार ॥

शान्तिनाथ तुम शान्तिनायक, पञ्चम चक्री जग सुखदायक ॥
तुम ही सोलहवे हो तीर्थकर, पूजें देव भूप सुर गणधर ॥

पञ्चाचार गुणोके धारी, कर्म रहित आठों गुणकारी ॥
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, निज गुण ज्ञान भानु प्रकटाया ॥

स्याद्वाद विज्ञान उचारा, आप तिरे औरन को तारा ॥
ऐसे जिन को नमस्कार कर, चढ़ूँ सुमत शान्ति नौका पर ॥

सूक्ष्म सी कुछ गाथा गाता, हस्तिनापुर जग विख्याता ॥
विश्व सेन पितु, ऐरा माता, सुर तिहुं काल रत्न वर्षाता ॥

साढे दस करोड़ नित गिरते, ऐरा माँ के आंगन भरते ॥
पन्द्रह माह तक हुई लुटाई, ले जा भर भर लोग लुगाई ॥

भादों बदी सप्तमी गर्भति, उत्तम सोलह स्वप्न आते ॥
सुर चारों कार्यों के आये, नाटक गायन नृत्य दिखाये ॥

सेवा में जो रही देवियाँ, रखती खुश माँ को दिन रतियां ॥
जन्म सेठ बदी चौदश के दिन, घन्टे अनहद बजे गगन घन ॥

तीनों ज्ञान लोक सुखदाता, मंगल सकल हर्ष गुण लाता ॥
इन्द्र देव सुर सेवा करते, विद्या कला ज्ञान गुण बढ़ते ॥

अंग-अंग सुन्दर मनमोहन, रत्न जड़ित तन वस्त्राभूषण ॥
बल विक्रम यश वैभव काजा, जीते छहों खण्ड के राजा ॥

न्यायवान दानी उपचारी, प्रजा हर्षित निर्भय सारी ॥
दीन अनाथ दुखी नही कोई, होती उत्तम वस्तु वोई ॥

ऊँचे आप आठ सौ गज थे, वदन स्वर्ण अरू चिन्ह हिरण थे ॥
शक्ति ऐसी थी जिस्मानी, वरी हजार छानवें रानी ॥

लख चौरासी हाथी रथ थे, घोड़े करोड़ अठारह शुभ थे ॥
सहस पचास भूप के राजन, अरबो सेवा में सेवक जन ॥

तीन करोड़ थी सुंदर गईयां, इच्छा पूर्ण करें नौ निधियां ॥
चौदह रतन व चक्र सुदर्शन, उतम भोग वस्तुएं अनगिन ॥

थी अड़तालीस कोड ध्वजायें, कुंडल चंद्र सूर्य सम छाये ॥
अमृत गर्भ नाम का भोजन, लाजवाब ऊंचा सिंहासन ॥

लाखो मंदिर भवन सुसज्जित, नार सहित तुम जिसमें शोभित ॥
जितना सुख था शांतिनाथ को, अनुभव होता ज्ञानवान को ॥

चलें जिव जो त्याग धर्म पर, मिले ठाठ उनको ये सुखकर ॥
पचीस सहस्रवर्ष सुख पाकर, उमड़ा त्याग हितंकर तुमपर ॥

वैभव सब सपने सम माना, जग तुमने क्षणभंगुर जाना ॥
ज्ञानोदय जो हुआ तुम्हारा, पाये शिवपुर भी संसारा ॥

कामी मनुज काम को त्यागें, पापी पाप कर्म से भागे ॥
सुत नारायण तख्त बिठाया, तिलक चढ़ा अभिषेक कराया ॥

नाथ आपको बिठा पालकी, देव चले ले राह गगन की ॥
इत उत इन्दर चँवर ढुरवें, मंगल गाते वन पहुँचावें ॥

भेष दिगम्बर अपना कीना, केश लोच पन मुष्ठी कीना ॥
पूर्ण हुआ उपवास छटा जब, शुद्धाहार चले लेने तब ॥

कर तीनों वैराग चिन्तवन, चारों ज्ञान किये सम्पादन ॥
चार हाथ मग चलतें चलते, षट् कायिक की रक्षा करते ॥

मनहर मीठे वचन उचरते, प्राणिमात्र का दुखड़ा हरते ॥
नाशवान काया यह प्यारी, इससे ही यह रिश्तेदारी ॥

इससे मात पिता सुत नारी, इसके कारण फिरो दुखारी ॥
गर यह तन प्यारा सगता, तरह तरह का रहेगा मिलता ॥

तज नेहा काया माया का , हो भरतार मोक्ष दारा का ॥
विषय भोग सब दुख का कारण, त्याग धर्म ही शिव के साधन ॥

निधि लक्ष्मी जो कोई त्यागे, उसके पीछे पीछे भागे ॥
प्रेम रूप जो इसे बुलावे, उसके पास कभी नहीं आवे ॥

करने को जग का निस्तारा, छहों खण्ड का राज विसारा ॥
देवी देव सुरा सर आये, उत्तम तप कल्याण मनाये ॥

पूजन नृत्य करें नत मस्तक, गाई महिमा प्रेम पूर्वक ॥
करते तुम आहार जहाँ पर, देव रतन वर्षाते उस घर ॥

जिस घर दान पात्र को मिलता, घर वह नित्य फूलता-फलता ॥
आठों गुण सिद्धों के ध्याकर, दशों धर्म चित काय तपाकर ॥

केवल ज्ञान आपने पाया, लाखों प्राणी पार लगाया ॥
समवशरण में धंवनि खिराई, प्राणी मात्र समझ में आई ॥

समवशरण प्रभु का जहाँ जाता, कोस चार सौ तक सुख पाता ॥
फूल फलादिक मेवा आती, हरी भरी खेती लहराती ॥

सेवा में छत्तिस थे गणधार, महिमा मुझसे क्या हो वर्णन ॥
नकुल सर्प मृग हरी से प्राणी, प्रेम सहित मिल पीते पानी ॥

आप चतुर्मुख विराजमान थे, मोक्ष मार्ग को दिव्यवान थे ॥
करते आप विहार गगन में अन्तरिक्ष थे समवशरण में ॥

तीनो जगत आनन्दित किने, हित उपदेश हजारो दीने ॥
पौने लाख वर्ष हित कीना, उम्र रही जब एक महीना ॥

श्री सम्मेद शिखर पर आये, अजर अमर पद तुमने पाये ॥
निष्पृह कर उद्धार जगत के, गये मोक्ष तुम लाख वर्ष के ॥

आंक सकें क्या छवी ज्ञान की, जोत सुर्य सम अटल आपकी ॥
बहे सिन्धु सम गुण की धारा, रहे सुमत चित नाम तुम्हारा ॥

नित चालीस ही बार पाठ करें चालीस दिन ।
खेये सुगन्ध अपार, शांतिनाथ के सामने ॥

होवे चित प्रसन्न, भय चिंता शंका मिटे ।
पाप होय सब हन्न, बल विद्या वैभव बढ़े ॥